हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्ताराष्ट्रिय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

केशवशतकम् : एक समीक्षात्मक अध्ययन

आयशा सिद्दीका

सारांश – राश्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ॰ केशव बलिराम हेडगेवार के हृदय में आरंभ काल से ही देश के प्रति स्वाभिमान और देशभक्ति की भावना जाज्ज्वल्यमान रही है। उन्होंने भारत को पराधीनता से मुक्ति दिलाने के लिए विभिन्न तत्कालीन आन्दोलनों में भाग लिया और जेल यात्रा भी की। इन आन्दोलनों में भाग लेकर उन्हें यह अनुभव हुआ कि इसप्रकार स्वाधीनता नहीं प्राप्त की जा सकती। मुक्त एवं समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण के लिए हिन्दू समाज को संगठित होना होगा। अपने इसी विचार के परिणामस्वरूप उन्होंने "राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ" की स्थापना की। प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से महान देशभक्त हेडगेवार जी के स्वतंत्रता सम्बन्धी विभिन्न प्रयासों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द – राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, सरसंघचालक, पराधिपत्य, आन्दोलन, परिषद, संस्था, सरकार्यवाह।

शोध –उद्येश्य– इस लघु शोध–पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं–

- हेडगेवार जी के राष्ट्र के प्रति उद्देश्यों को प्रकाशित करना।
- लोगों में राष्ट्रभक्ति की भावना को जाग्रत करना।
- देश के प्रति समर्पण की भावनाओं को उद्भूत करना।
- भारतीय संस्कृति की रक्षा करना।

शोध पद्धति – यहाँ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक शोध पद्धति के द्वारा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उद्देश्यों एवं महत्ता को बताया गया है।

विश्लेषण – राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना वर्श 1925 में हुई थी। संघ की श्रृंखला को देखकर 1932 में उसे प्रतिबंधित कर दिया गया परन्तु डॉ॰ हेडगेवार के कुशल निर्देशन, हिन्दू महासभा के सहयोग एवं नागपुर के प्रचारकों के अथक प्रयासों से संघ विस्तृत हो गया और 1940 तक संघ के युवा स्वयं सेवकों की संख्या लगभग सात लाख हो गई। इसका मुख्य उद्येश्य भारत को खुशहाल रखना, समृद्धशाली, सनातन संस्कृति के मूल्यों को बनाए रखना व राष्ट्रवादी व्यक्तित्व का निर्माण करना था।

प्रस्तावना – केशवशतकम्1 आचार्य मिथिला प्रसाद त्रिपाठी द्वारा रचित शतक काव्य है। त्रिपाठी जी का जन्म 31.08.1950 ग्राम भस्मा जिला रीवा, मध्यप्रदेश में हुआ था। त्रिपाठी जी देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला विभाग में सेवारत रहे। इन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं पर त्रिपाठी जी की रचनाएँ उपलब्ध हैं, जिनमें से एक केशवशतकम् है। इसमें त्रिपाठी जी ने केशवबलिराम हेडगेवार जी के जीवन और कर्तृ का वर्णन किया है।

ISSN : 2582-9092

हेडगेवार जी का जन्म विक्रम संवत् 1889 में नागपुर में हुआ था। स्वराष्ट्रभक्त हेडगेवार जी ने बचपन से ही पराधीनता को स्वीकार नहीं किया। बाल्यावस्था में ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के शासनकाल के साठ वर्ष पूरा होने पर आयोजित समारोह में वितरित मिष्ठान को इन्होंने नाली में फेंक कर उदात्तदेशभक्ति और राष्ट्रीय स्वाभिमान का अत्यन्त अल्प आयु में ही परिचय दिया। इन्होंने पूना से शाला प्रशिक्षण का अध्ययन पूर्ण किया। तत्पश्चात चिकित्साशास्त्र का अध्ययन करने हेतु कलकत्ता चले गए। वहाँ से इन्होंने अपना शिक्षण–कार्य पूरा किया और साथ ही "पराधिपत्य नष्ट हो, वन्दे मातरम्" इस प्रकार की नारेबाजी भी करते रहे–

वन्दे स्वमातरमलं परशासनेन
संव्याहरत्ययमबोधि विदेशजातैः।
संघेहया पठितवानपिराष्ट्रभक्तः
शिक्षामपूरि जगति प्रथितां चिकित्साम्।।2

असहयोग आन्दोलन में हेडगेवार जी ने विदेशी शासन की कड़ी निन्दा की और भारतीयों को स्वराज्य प्राप्ति हेतु सम्बोधित किया। फलस्वरूप उन्हें अकारण ही जेल में बन्द कर दिया गया। इन सबके मध्य उन्हें इस बात की अनुभूति हुई कि जब तक हिन्दुजन का संघ तैयार नहीं होगा तब तक स्वतन्त्रता हाथ में आने वाली नहीं है। उनके इसी चिन्तन एवं मंथन का प्रतिफल थी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ नामक संस्कारशाला, जिसकी स्थापना 1925 में विजयादशमी के दिन हुई–

दध्यौ कृती दृढ़मतिः किल केशवोऽसौ
संकल्पितश्च विजयादशमी दिने यत्।
बाणाक्षिनारदशशिप्रमिते च वर्षे
संघाकुरः समुदितो निजसेवकानाम्।।3

हेडगेवार जी चाहते थे कि हिन्दुओं का प्रिय राष्ट्र हिन्दुस्थल हो और हिन्दुओं द्वारा निर्मित संस्कृति यहाँ दमकती रहे। सम्पूर्ण हिन्दुस्थल हिन्दू राष्ट्रीयता के भावबोध की उपासना करे और इस भूमि पर हिन्दू लोग विकसित होते रहें। सरसंघचालक हेडगेवार जी संघ का संगठन करने के लिए सदैव जनता में विचरण करते रहते थे। वे लोगों से संघ के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करते व उनके विचारों को जानने के लिए मौन हो जाते थे। उन्होंने सभी लौकिक एवं धार्मिक कार्यों को छोड़कर मात्र संघ का प्रचार–प्रसार करने के लिए प्रत्येक स्थान पर सम्मेलन किया। उनका यह प्रयास सफल हुआ। संघ के माध्यम से समस्त जनता एकजुट हो गई और उनमें देशभक्ति की भावना जाग्रत हुई। समग्र कार्य क्षेत्र को अनेक क्षेत्रों में

ISSN : 2582-9092

बाँटकर अपने देश में फैले संघ प्रचारक लोगों ने स्वराष्ट्र के प्रति उत्पन्न प्रेम और हिन्दू विचारधारा को गाँव, नगर और घर–घर में फैलाया है।

क्षेत्रान् विभज्य निजराष्ट्रभवां च प्रीतिं
संघ प्रचारकजना वितता स्वदेशे।
ग्रामे पुरे सदसि हिन्दुविचारणाञ्च
व्यस्तारयन् जयति केशव कीर्ति माला।।4

वर्तमान समय में भारत राष्ट्र में हिन्दू जनता हिन्दुत्व का प्रसार करने में असमर्थ है और इसका कारण यह है कि आज के शास्ता निर्वाचन के माध्यम से केवल पद प्राप्त करना चाहते हैं। देश की संस्कृति को वे भूलते जा रहे हैं। ऐसे में संघ ही है जो राष्ट्रवाद की शिक्षा देता है। अनेक भारतीय संघ में पूरी निष्ठा के साथ कार्यरत हैं। अपने सभी साधनों को सामाजिक कार्यों में समर्पित कर स्वतः मातृभूमि भक्ति और देशभक्ति जिसमें भी जाग्रत हो और जो सेवा कार्य में प्रसन्न हो, वही देशभक्त है और राष्ट्र को सुचारु रूप से चलाने में सक्षम है।5

संघ के प्रसार के समय हेडगेवार जी की मुलाकात माधव सदाशिव गोलवलकर से हुई और वे हेडगेवार जी के अनुयायी बन गए। बाद में वे शाखा के कार्यवाह हुए और लोगों को शाखा से जोड़ने के लिए प्रेरित करने लगे। देश में स्वयं सेवकों और संघ का कार्य बढ़े यह सोचकर हेडगेवार जी ने माधव जी को संघ का सरकार्यवाहक घोशित कर दिया–

राश्ट्रे स्वयंसेवक संघकार्यं
वर्धेत संचिन्त्य च केशवेन।
श्रीमाधवः स्यात्सरकार्यवाहः
कार्यार्थमग्रे निजसेवकानाम्।।6

21 जून 1940 को हेडगेवार जी के स्वर्गवास के बाद माधव जी संघ के प्रति स्वयं ही समर्पित होते हुए द्वितीय सरसंघचालक हुए–

नूनैकविंश दिवसे भृगुवासरे च
वर्शेऽथ भान्य युगरात्रिनिशाकरे ऽपि।
श्री केशवो दिवमगाच्च यशः प्रकाशो
श्रीमाधवः समभवत् सर संघचालः।।7

संघ में विभिन्न पदों पर रहकर लोगों ने अपना कार्य–भार संभाला। राजस्थान के संघ प्रान्त प्रचारक के रूप में नागपुर के व्यासोपाधिकारी श्री वत्सराज, संघ सरकार्यवाह के रूप में उमरेठ निवासी

ISSN : 2582-9092

भैया जी दाणी, संघ के मध्यक्षेत्र प्रचारक के रूप में टिमर्नी के श्री भाऊ साहब भुस्कुटे एवं संघ के महाराष्ट्र पूर्व प्रान्त संघचालक के रूप में बाबा राव भिड़े हुए।8 साथ ही प्रारम्भिक प्रचारक एवं अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख के रूप में बाबा साहब आपटे, नागपुर विभाग संघचालक के रूप में परशुराम बढ़िये, नागपुर कार्यालय के पूर्व प्रमुख के रूप में नलिनी किशोर गुहा, श्रीकृष्णराव मोहरील, पुणे विभाग संघचालक के रूप में डा॰ अमूल्य घोष, अभ्यंकर भाउराव, प्रारम्भिक प्रचारक के रूप में श्री दिनकर वाइकर, रामभाऊ जामगड़े और अण्णाजी वैद्य हुए।9 इसके अतिरिक्त विदर्भ के प्रान्त संघचालक के रूप में अप्पाजी जोशी, हेडगेवार स्मारक समिति के व्यवस्थापक बाबूराव वाद्य, सह सरकार्यवाह के रूप में अप्पासाहब काणे, ग॰ वि॰ केतकर, यादवराव जोशी संस्थापिका राष्ट्रसेविका समिति श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर, नागपुर के पूर्वप्रान्त संघचालक के रूप में बाबा साहब घटाटे और साहब ढेबले इत्यादि संघ के प्रति समर्पित हुए–

अप्पाजी–बाघसहितोप्यथ बाबूरावः

काणेश्च केतकर यादवरावकौच।

लक्ष्मीति केलकरनामवती घटाटे

नाना बभूवुरिह संघसमर्पिताश्च।।10

1973 को माधव जी के देहान्त के पश्चात तृतीय सरसंघचालक के रूप में देवरस उपनाम वाले बाबा साहब नियुक्त हुए।11 हेडगेवार जी द्वारा स्थापित किया गया यह संघ सम्पूर्ण राष्ट्र में अखण्ड राष्ट्रवाद की शिक्षा देता हुआ देश के रक्षार्थ पूर्ण रूप से जाग्रत है। विभिन्न शाखाओं एवं प्रशाखाओं में विस्तृत यह संघ भारत राष्ट्र के विकास एवं उसकी संस्कृति की रक्षा करने में समर्थ है।

विद्याभारती, ग्रामभारती, प्रबुद्धभारती, संस्कारभारती और सेवाभारती ये पाँच स्वनाम गुणख्यापक भारती नामक संस्थाएँ हैं। इसके अतिरिक्त मजदूर संघ, शिक्षक संघ और किसान संघ नामक संगठन व एक राष्ट्रसेविका समिति है।12 परिषद नाम से ख्यात छः संस्थाएँ भारतीय जनता की विद्यार्थी परिषद, विकास परिषद, वनवासी कल्याण परिषद, भारतीय संस्कृत परिषद, लोक शिक्षा परिषद और विश्व हिन्दू परिषद हैं।13 ये सभी संस्थाएँ हेडगेवार जी के उद्देश्यों एवं उनकी विचारधारा को ध्वनित करते हुए चारों ओर फैल गई हैं। यह संघ सर्वजननिष्ठ एवं स्वदेशनिष्ठ है। इसमें वेद विद्या, राजशास्त्र, तन्त्रशास्त्र और न ही ब्रह्मशास्त्र समावेशित हैं। इसमें तो केवल राष्ट्रज्ञान ही सिद्धान्तित है जो अपने देश की उन्नति और हिन्दुत्व की रक्षा के लिए लोगों को प्रेरित करता है।

निष्कर्श– देश–प्रेम प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निहित होता है। प्रस्तुत अध्ययन से यह निश्कर्ष प्राप्त होता है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ नामक संस्था भारत में अखण्ड राष्ट्रवाद को बनाए रखने के लिए स्थापित की गई थी। ऐसे में हेडगेवार जी द्वारा संगठित संघ राष्ट्रवाद की प्रेरणा देता है। जब तक संसार

ISSN : 2582-9092

में संघकारी हिन्दू हैं और संघ द्वारा निर्मित शाखाएँ हैं तब तक राष्ट्र में एकता बनी रहेगी। 'वन्दे मातरम्' ही संघ का मंत्र है जिससे राष्ट्र का जागरण होता है। जब तक संसार की सत्ता है तब तक संघ का यही लक्ष्य मात्र पर्याप्त है जिससे दूसरी बार अन्य कोई भी कभी भी आँख उठाकर देखने में समर्थ नहीं हो सकता। संघ के प्रयास से हिन्दू इस संसार में संगठित और बलवान हों और देश की रक्षा हेतु विद्यमान हों।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. **केशवशतकम्** – डॉ॰ मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, प्रकाशक : आशाकुमार त्रिवेदी, अध्यक्ष श्री त्रिवेदी जगन्नाथ छात्रालय ट्रस्ट व मालवीय भारती मन्दिर, इन्दौर (म॰प्र॰),1999
2. वही पृ0 8, श्लो॰ सं॰ 15,
3. वही पृ0 10 श्लो॰ सं॰ 24
4. वही पृ0 20 श्लो॰ सं॰ 58
5. वही पृ0 28 श्लो॰ सं॰ 89
6. **माधवीयम्** – डॉ॰ मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, प्रकाशक : संस्कृति प्रसार मंच, इन्दौर (म॰प्र॰),2000 पृ0 24 श्लो॰ सं॰ 70
7. वही पृ0 27 श्लो॰ सं॰ 81
8. केशवशतकम्– पृ0 25 श्लो॰ सं॰ 78
9. वही पृ0 25 श्लो॰ सं॰ 79
10. वही पृ0 26 श्लो॰ सं॰ 80
11. वही पृ0 26 श्लो॰ सं॰ 81
12. वही पृ0 28 श्लो॰ सं॰ 92
13. वही पृ0 29 श्लो॰ सं॰ 93

शोध–छात्रा
संस्कृत विभाग,अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़ (उ॰प्र॰)